''ज्ञान ,विज्ञान आणि सुसंस्कार यासांठी शिक्षणप्रसार''

शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी सालुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था,संचलित

विवेकानंद महाविद्यालय (स्वायत्त),कोल्हापूर

''हिंदी विभाग''

शै.वर्ष २०२२-२३

प्रोजेक्ट लेखन

हिंदी पेपर नं १४

भाषा विभाग

प्रोजेक्ट विषय:- प्रगतीवाद की विशेषताऐ

पटकथा के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए नाटक और फिल्म की पटकथा का अंतर

अ.क्रं	छात्रो के नाम	रोल नं	हस्ताक्षर
१)	नम्रता लाड	४८९४	N.R.Lad
२)	तबस्सुम पटेल	४९३१	[signature]
३)	आदित्य कदम	४८६१	[signature]
४)	ऐमन नावलेकर	४९२६	A.T. Navlekar
५)	जुवेरिया शेख	४९७३	Shaikh

सहायक प्राध्यापक
डॉ.डी.आर तुपे

हिंदी विभागाध्यक्ष
डॉ.आरिफ महात

प्राचार्य
डॉ.आर.आर.कुभांर

''ज्ञान ,विज्ञान आणि सुसंस्कार यासांठी शिक्षणप्रसार''

Rajdhani
DATE / /

अनुक्रमणिका

अ. क्र	शीर्षक	पृष्ठ क्र	हस्ताक्षर
1]	प्रस्तावना	1	
2]	उद्देश : विषय विवेचन	2	
3]	प्रगतिवाद की विशेषतायें	3 - 8	
4]	निष्कर्ष	9	
5]	संदर्भ ग्रंथ	10	
6]	प्रतिज्ञापत्र	11	

Rajdhani
DATE / /

प्रगतिवाद कि विशेषताएँ :-

प्रस्तावना :-

प्रगतीवाद का मूल आधार कार्ल मार्क्स की विचार-धारा है। मार्क्स ने जो राजशास्त्र, समाजशास्त्र अर्थशास्त्र में जो विचार अभी व्यक्त किया। मार्क्स ने समाज को दो वर्गो में स्वीकार किया। 1] शो पित्र वर्ग 2] शोषक वर्ग। सन 1936 में प्रेमचंद को अध्यक्षता में भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई। हिंदी के प्रमुख कवि निराला, सुमित्रानंद पंत, शिवमंगलसिंह शर्मा, गिरिजाकुमार माथुर भारत भूषण अग्रवाल, रामधारीसिंह दिनकर आदि ने प्रगतिवादी काव्य लेखन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रगतिवाद यह एक व्यापक विचारधारा है।

Rajdhani
DATE / /

उद्देश

1] सामाजिक रूढियों का विरोध करना ।

2] मानव को मानव की तरह पेश आना ।

3] मार्क्सवादी विचारधारा को समझना ।

4] प्रगतिवाद क्या है ? उसकी विशेषता कैसी है ? प्रगतिवादी कवि कौन है यह जानना ।

5] शोषकों के प्रति घृणा एवं शोषितों के प्रति सहानुभूतीपूर्ण भावनाओं की अभिव्यक्ति के साथ-साथ क्रांती की भावना को जगाना ।

6] वर्तमान समाज के किसान, किसान मजदूर, मिल मजदूर, पीड़ितों की यथार्थ स्थिती का चित्रण करना ।

7] समाज में होनेवालें अत्याचारों को पूरी तरह से मिटना ।

विशेषताएँ

1] रूढियों का विरोध -

प्रगतिवादी कविता में रूढियो तथा परंपराओं, धर्म तथा ईश्वर का विरोध हुआ है। इनके लिए मंदिर - मस्जिद, गीता - कुरान महत्व नही रखते। मार्क्सवादी विचारधारा में भी इन सबका प्रबल विरोध हुआ है। अंधविश्वास, मिथ्या - परंपराओं और रूढिओं का विरोध किया और मानव को मानव बनकर चलने का आग्रह किया।

" भ्रांत यह अतिरंजित इतिहास?
व्यर्थ के गौरव - गान
दर्प से एक महान
अपर मुख म्लान
किसी को आर्य - अनार्य
किसी को यवन
....
"मनुष्य को मनुष्य न कहना आह"

मनुष्य को मनुष्य न कहकर उसे जाति उसके जाती के आधार पर परखा जाता है इसका प्रगतिवादी कवि विरोध करते है।

2] शोषितो के प्रति करुण गान :-

प्रगतिवादी कवियों ने शोषितों के प्रति अपनी गहरी सहानुभूति अभिव्यक्त की है। वर्तमान समाज के किसान। किसान मजदूर मिल मजदूर एवं पीडितो की यथार्थ स्थिती का चित्रण इन कवियों की कविताओं में हुआ है।

Rajdhani
DATE / /

" ओ मजदूर । ओ मजदूर ॥
तू सब चीजो का करता , तू ही सब चीजो से पर
ओ मजदूर । ओ मजदूर ॥ "

इस प्रकार प्रगतिवादी कवियों ने समाज के शोषितों पीड़ितों का करुण-गान किया है।

3] शोषितों के प्रति घृणा तथा रोष :-

समग्र प्रगतिवादी काव्य में शोषकों के प्रति घृणा एवं रोष का भाव प्रकट करते हुआ है। प्रगतिवादी कवियों को यह विश्वास है कि जब तक पूँजीवाद रहेगा तब तक समाज का शोषण होता रहेगा। यह कवि पूँजीवाद के पोषकों - व्यापारको जमीदारों के प्रति घृणात्मक भाव प्रकट करते है। दिनकर लिखते है -

" श्वानों को मिलता दूध-वस्त्र, भूखे बालक अकुलाते है
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर, जाड़ों की रात बिताते है।
युवती की लज्जा वसन बेच, जब ब्याज चुकाए जाते है।
मालिक जब तेल फुलेलों पर, पानी, सा द्रव्य बहाते है।
पापी महलों का अंहकार, देता मुझे तब आमन्त्रण।

इस प्रकार पूँजीवादी वर्ग के प्रति इन कवियों के मन में स्वाभाविक घृणा और रोष है। परन्तु प्रगतिवादी कवि दृढता के साथ यह विचार भी व्यक्त करता है कि यह शोषण और अत्याचार अधिक दिनो तक नहीं चल सकेगा। एक दिन उसका अंत अवश्य होगा।

4] क्रांती की भावना :-

प्रगतिवादी कवियों में शोषको के प्रति घृणा तथा शोषितो के प्रति सहानुभूती पूर्ण भावनाओं की अभिव्यक्ति के साथ साथ क्रांति की भावना को भी दिखाया गया है। यह कवि वर्ग हीने समाज की स्थापना चाहते है। आर्थिक विषमता को समाप्त

Rajdhani
DATE / /

समाप्त करने के लिए यह कवि पूँजीवादी व्यावस्था को खत्म करना चाहते है। इसके लिए वह 'क्रांति' के मार्ग को अपनाने का आग्रह करते है। सुमित्रानंदन पंत लिखते है -

" आ कोकिल बरसा पावक कण,
नष्ट भ्रष्ट हो जीर्ण पुरातन "

स्पष्ट है प्रगतिवादी अधिकतर कवियों ने क्रांति की इस चिनगारी को फैलाने का आवाहन किया। इन कवियों ने समूह को एकत्रित कर शोषकों के विरोध में क्रांति करने का आग्रह किया है।

5] मार्क्स तथा रूस का गुणगान -

प्रगतिवादी कवियों ने कार्ल मार्क्स के प्रति श्रद्धा प्रकट की है। साथ ही रूस और लाल सेना की स्तुती की है, मार्क्स की विचारधारा का इन कवियों को गर्व है। मार्क्स ने जिस समाजवादी विचारधारा को प्रस्तुत किया और उस विचारधारा से प्रेरित होकर रूस में राजकारोबार चला उसका गुण-गान प्रगतिवादी कवियों की अनेक कविताओं में दिखाई देता है। कवि नरेंद्र शर्मा लिखते है -

" लाल रूस है ढाल साथियों। सब मजदूर किसानों का
वहाँ राज है पंचायत का, वहाँ नहीं बेकारी।
लाल रूस का दुश्मन साथी, दुश्मन सब इन्सानों का।
दुश्मन है सब मजदूरों का दुश्मन सभी किसानों का।

इस प्रकार प्रगतिवादी कवि मार्क्स तथा रूस का गुणगान कर पुरी दुनिया में मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार समाजवादी व्यावस्था निर्माण करने के पक्ष में है।

6] मानवतावाद :-

प्रगतिवादी कवियो का मूल स्वर मानवतावादी है। इन कवियों की मानवता अपने देश तक सीमित न होकर वह विश्वव्यापी है। इन कवियों ने किसानों मजदूरों, वेश्याओं, भिखमंगो पर अपनी कविता लिखकर आम आदमी के प्रति अपनी संवेदनाकों अभिव्यक्त किया है। नरेंद्र शर्मा लिखते है।

" जाने कबतक घाव भरेंगे इस घायल मानवता के ?
जाने कबतक सच्चे होंगे, सपने सबकी समता के ? "

इस प्रकार प्रगतिवादी कविता में व्यापक मानवतावाद को अभिव्यक्ति को मिली है।

7] नारी विषयक नवीन दृष्टिकोण :-

प्रगतिवादी कवियों ने नारी विषयक, नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत किया अबतक नारी केवल उपयोग की वस्तु या कल्पनालोक की सुंदर रूपवती थी इन कवियों ने नारि का यथार्थवादी रूप प्रकट किया। प्रगतिवादी कवि स्त्री-पुरुष को समान मानते है। लिंग-भेद के आधार पर अंतर करना इन्हे मान्य नही है। नारी को एक सजग व्यक्तित्व के रूप में इन कवियों ने स्वीकार किया। सुमित्रानंदन पंत लिखते है।

"योनी नही है रे नारी वह भी मानवी प्रतिष्ठित।
उसे पूर्ण स्वाधीन करो वह रहे न नर पर अवसित।

नारी पुरुष की जीवनसाथी है वह पुरुष के साथ कंधे से कंधा लगाकर चलनेवाली सहचरणी है. वह मानवी है उसका सम्मान होना चाहिए। इसका स्वीकार इन कवियों ने किया है।

Rajdhani
DATE / /

सामाजिक समस्याओं का चित्रण -

प्रगतिवादी कवियों में सम - सामायिक समस्याओं का चित्रण हुआ है। वर्तमान की वास्तविकता को वह कवि रेखांकित करते है। अकाल की समस्या महँगाई, दरिद्रता, बेकारी, नारी की दर्दनाक स्थिती आदि को प्रगतिवादी कविता में अभिव्यक्ति मिली है। नागार्जुन आजादी का व्यंग्य से वर्णन करते हुए लिखते है -

" कागज की आजादी मिलती
ले लो दो-दो आने में "

सम - सामायिक सभी समस्याओं का चित्रण प्रगतिवादी ~~हर~~ कवि ने अपने ~~कवि~~ कविताओं में किया है।

Rajdhani
DATE / /

निष्कर्ष

प्रगतिवाद कार्ल मार्क्स के विचाराधारा पर आधारित है। इसमें शोषितों किसान गरिबों पर होनेवाले अत्याचारों को मिटाने के लिए कई कवियों ने अपनी कविता लिखकर समाज को यह दिखा दिया है कि वह भी एक इन्सान है और इन्हे भी जीने का हक है। इसीलिए इन लोगो को भी मानवता से हर हक मिलना चाहिए।

Rajdhani
DATE / /

संदर्भ ग्रंथसूची

1] हिंदी साहित्य का इतिहास = आ. रामचंद्र शुक्ल ।

2] हिंदी साहित्य का इतिहास = डॉ. नगेंद्र ।

3] कबीर = आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ।

4] हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास = डॉ. बचन सिंह

प्रतिज्ञापत्र

हम शपथपूर्वक घोषित करते है कि,प्रस्तुत प्रोजेक्ट लेखन का कार्य हमारे खुद के प्रयत्नो का परिणाम है हमारी जाणकारी के अनुसार इस विषय पर अब तक स्वतंत्र रूप से कोई कार्य संपन्न नही हुआ यह प्रोजक्ट हमारे विषय अध्यापको के मार्गदर्शन तथा स्त्रोतो के आधार पर संपन्न हुआ है.

अ.क्रं	छात्रो के नाम	रोल नं	हस्ताक्षर
१)	नम्रता लाड	४८९४	N.K.Lad
२)	तबस्सुम पटेल	४९३१	[signature]
३)	आदित्य कदम	४८६१	[signature]
४)	ऐमन नावलेकर	४९२६	A.T.Navalekar
५)	जुवेरिया शेख	४९७३	Shaikh

''ज्ञान ,विज्ञान आणि सुसंस्कार यासांठी शिक्षणप्रसार''

शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी सालुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था,संचलित

विवेकानंद महाविद्यालय (स्वायत्त),कोल्हापूर

''हिंदी विभाग''

शै.वर्ष २०२२-२३

प्रोजेक्ट लेखन

हिंदी पेपर नं १५

भाषा विभाग

प्रोजेक्ट विषय:- पटकथा के स्वरूप

पटकथा के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए नाटक और फिल्म की पटकथा का अंतर

अ.क्रं	छात्रो के नाम	रोल नं	हस्ताक्षर
१)	नम्रता लाड	४८९४	N.K.Lad
२)	तबस्सुम पटेल	४९३१	Patel
३)	आदित्य कदम	४८६१	[illegible]
४)	ऐमन नावलेकर	४९२६	A.T.Navalekar
५)	जुवेरिया शेख	४९७३	Shaikh

सहायक प्राध्यापक
डॉ.डी.आर तुपे

हिंदी विभागाध्यक्ष
डॉ.आरिफ महात

प्राचार्य
डॉ.आर.आर.कुभांर

VIVEKANAND COLL... KOLHAPUR ESTD JUNE 1964

''ज्ञान ,विज्ञान आणि सुसंस्कार यासांठी शिक्षणप्रसार''

Rajdhani
DATE / /

अनुक्रमाणिका

अ. क्र.	शीर्षक	पृष्ठ क्र.	हस्ताक्षर
1)	प्रस्तावना	1)	
2)	उद्देश्य	2)	
3)	पटकथा का स्वरूप	3)	
4)	नाटक और फिल्म कि पटकथा का अंतर	4-6	
5)	निष्कर्ष	7)	

Rajdhani
DATE / /

प्रस्तावना

मशहूर साहित्यकार और कई कामयाब टेलीविजन धारावाहिकों के लेखक स्वर्गीय मनोहर श्याम जोशी ने कई उपन्यासों आदि के साथ-साथ एक महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी जिसका शीर्षक है - पटकथा लेखन - एक परिचय। पटकथा ये दो शब्दों के मेल से बना है - 'पट' और 'कथा'। कथा का मतलब कहानी और पट का मतलब परदा। ऐसी कथा जो परदे पर दिखाई जाए। चाहे वो परदा बड़ा हो या छोटा। सिनेमा और टेलीविजन दोनों ही माध्यमों के लिए बनने वाली फिल्मों, धारावाहिकों आदि का मूल आधार पटकथा ही होती है। इसी के अनुसार निर्देशक अपनी शूटिंग की योजना बनाता है.

Rajdhani
DATE / /

उद्देश्य

पटकथा के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए नाटक और फिल्म की पटकथा का अंतर स्पष्ट कीजिए।

Rajdhani
DATE / /

पटकथा का स्वरूप

किसी भी फिल्म युनिट या धारावाहिक बनाने वाली कंपनी को 'पटकथा' तैयार करने लिए, सबसे पहले जो चीज चाहिए होती है वो है 'कथा'। कथा ही नहीं होगी तो पटकथा कैसे बनेगी? अब सवाल यह उठता है कि यह कथा या कहानी हमें कहाँ से मिलेगी? तो इसके कई स्रोत हो सकते हैं- हमारे स्वयं के साथ या आसपास की में घटी कोई घटना अखबार में छपा कोई समाचार हमारी कल्पनाशक्ति से उपजी कोई कहानी इतिहास के पन्नो से झाँकता कोई व्यक्तित्व या सच्चा किस्सा अथवा साहित्य की किसी अन्य विधा की कोई रचना। मशहूर उपन्यासो कहानियों पर फिल्म या सिरियल बनाने की परंपरा काफी पुरानी है। अभी कुछ वर्ष पूर्व ही शरत्‌चंद्र चट्टोपाध्याय के प्रसिद्ध उपन्यास देवदास को हिंदी में तीसरी बार फिल्माया गया। पटकथा की संरचना या ढाँचा किस तरह तैयार होता है? फिल्म या टी.वी. की पटकथा की संरचना नाटक की संरचना से बहुत मिलती है। अंग्रेजी में इसे कहते हैं स्क्रीनप्ले, नाटक की तरह यहा भी पात्र-चरित्र होते है। नायक प्रतिनायक होते है, अलग-अलग घटनास्थल होते हैं। जबकि फिल्म में इसकी कोई सीमा नहीं, हर दृश्य किसी नऊ स्थान पर घटित हो सकता है। इसकी वजह है दोनो माध्यमों में मूलभूत अंतर. नाटक एक सजीव कला माध्यम है, जहाँ अभिनेता अपने ही जैसे जीवंत दर्शकों के सामने अपनी कला का प्रदर्शन करते है। सब कुछ वही उसी वक्त घट रहा होता है।

Rajdhani
DATE / /

नाटक और फिल्म की पटकथा का अंतर

नाटक का पूरा कार्य-व्यापार एक हि मंच पर घटित होता है एक निश्चित अवधि के दौरान। जबकि फिल्म या टेलिविजन की शूटिंग अलग अलग सेटों या लोकेशनों पर दो दिन से लेकर दो साल तक कि अवधि में की जा सकती है। इसलिए नाटक का कार्य-व्यापार, दृश्यों की संरचना और चरित्रों की संख्या आदि को सिमित रखना पड़ता है, लेकिन सिनेमा या टेलिविजन में ऐसा कोई बंधन नहीं होता है। जो एक हि दिशा में आगे बढ़ सकता है। जबकि सिनेमा मे फ्लैशबैक या फ्लैश फॉरवर्ड तकनीकों का इस्तेमाल करके आप घटनाक्रम को किसी भी रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं। फ्लैशबैक वो तकनीक होती है, जिसमें आप अतीत में घटी किसी घटना को दिखाते हैं और फ्लैश फॉरवर्ड में आप भविष्य में होने वाली किसी हादसे को पहले दिखा देते हैं।

इन दोनो तकनीकों को हम एक-एक उदाहरण से समझने की कोशिश करते है। मान लिजिए हम रांगेय-राघव की कहानी गूंगे पर फिल्म बना रहे हैं, और हमारी फिल्म शुरु होती है सड़क के दृश्य से जहाँ कुछ किशोर लड़के मिलकर एक दुबले-पतले लड़के को पीट रहे है। मार खा रहा लड़का भाग कर एक घर के दरवाजे पर पहुँचता है। घर के भीतर से भाग कर चमेली आती है। चमेली घर की दहलीज पर सर रखे, खून से लथपथ गूंगे को देखती है जो अपनी व्यथा को व्यक्त करने मे असमर्थ है। अब हम पागलखाने का वो दृश्य दिखाते हैं, जहाँ कुछ दिन पहले चमेली अपने सहेलियों के साथ गई थी और जहाँ पहली बार उसकी गूँगे से मुलाकात हुई थी।

यही वर्तमान से अतीत मे जाना फ्लैशबैक की तकनीक कहलाता है। फ्लैश फॉरवर्ड समझने के लिए हम मोहन राकेश के नाटक अंडे के छिलके का वो दृश्य लेते है। श्याम के बाजार जाने के बाद वीना घर ठीक-ठाक कर रही है। उसे वो मोजा मिलता है जिसमें अंडे के छिलके भरे हुए है। वैसे मूल नाटक में यह दृश्य इस प्रकार नहीं है लेकिन अगर इसकी पटकथा लिखी जाए और हम इस दृश्य में फ्लैश फॉरवर्ड तकनीक का प्रयोग करें तो दृश्य कुछ इस तरह से बनाया जा सकता है। कि अचानक वीना के मन में यह विचार कौंधता है कि ये मोजे उसकी सास जमुना देवी के हाथों लग गए है। वो पूरे परिवार तथा पड़ोसियों के सामने मोजों मे से अंडे के छिलके जमीन पर गिरा कर उसे बुरा-भला कह रही है। हम वापस वर्तमान में आते है और वीना अपना संवाद पूरा करती है- 'कितनी बार कहा छिलके मोजे में मत रखा करो, कहीं किसी के हाथ लग गए तो लेने के देने पड़ेंगे।' और चाय का पानी हीटर पर रखने के लिए चली जाती है।

यहाँ एक तथ्य गौर करने लायक है, वो यह की फ्लैशबैक और फ्लैश फॉरवर्ड दोनों ही युक्तियों का इस्तेमाल करने के पश्चात हमें वापस वर्तमान में आना जरुरी है। ताकि दर्शकों के मन मे किसी किस्म का असमंजस न रहे। फिल्म या टेलिविजन माध्यम में सुविधा यह भी है की एक ही समय खंड में अलग-अलग स्थानों पर क्या घटित हो रहा है, दिखाया जा सकता है। मसलन, हम दिखाते हैं हमारा कम पढ़ा-लिखा नायक गाँव में नदी में डूबते एक बच्चे की जान बचाता है, ठीक उसी समय हजारों मील दूर किसी महानगर में रहनेवाले हमारे नायक अपनी बेशकीमती विदेशी कार से एक बूढ़े फेरीवाले को टक्कर मार देता है।

Rajdhani
DATE / /

पटकथा की मूल इकाई होती है दृश्य। एक स्थान पर एक ही समय में लगातार चल रहे कार्य व्यापार के आधार पर एक दृश्य निर्मित होता है। इन तीनों में किसी भी एक के बदलने से दृश्य भी बदल जाता है। हम आपके पाठ्यक्रम से उदाहरण लेके प्रस्तुत किये हैं।

Rajdhani
DATE / /

निष्कर्ष

सिनेमा या टेलिविजन के कार्यक्रमों के निर्माण मे कई टेक्निकल चीजों का सहारा लेना पड़ता है। पटकथा के शुरु में दिए गए संकेत फिल्म या टी.वी. के कार्यक्रम के निर्देशक, कैमरामैन, आर्ट डायरेक्टर, प्रोडक्शन मैनेजर तथा उनके सहायकों की अपने-अपने काम में काफी मदद करते है। इसी प्रकार दृश्य के अंत कट टू, डिजॉल्व टू, फेड आउट आदि जैसी जानकारी निर्देशक व एडीटर को उनके काम में सहायता पहुँचाती है।

अब कंप्युटर पर ऐसे सॉफ्टवेयर आ गए है, जिनमें पटकथा लेखन का प्रारूप बना बनाया होता है, साथ ही साथ वो आपको ये बताने में भी सक्षम होते हैं कि आपकी पटकथा में कहाँ-कहाँ पर गड़बड़ रही है।

प्रतिज्ञापत्र

हम शपथपूर्वक घोषित करते है कि,प्रस्तुत प्रोजेक्ट लेखन का कार्य हमारे खुद के प्रयत्नो का परिणाम है हमारी जाणकारी के अनुसार इस विषय पर अब तक स्वतंत्र रूप से कोई कार्य संपन्न नही हुआ यह प्रोजक्ट हमारे विषय अध्यापको के मार्गदर्शन तथा स्त्रोतो के आधार पर संपन्न हुआ है.

अ.क्रं	छात्रो के नाम	रोल नं	हस्ताक्षर
१)	नम्रता लाड	४८९४	N. R. Lad
२)	तबस्सुम पटेल	४९३१	Patel
३)	आदित्य कदम	४८६१	[illegible]
४)	ऐमन नावलेकर	४९२६	A.T. Navalekar
५)	जुवेरिया शेख	४९७३	Shaikh